Course : **M.A Education, Part-II**

Paper : **XVI (Educational Evaluation and Measurement)**

Prepared by : **Dr. Meena Kumari**

Topic : **शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा**
(Concept of Educational Evaluation)

---

1. प्रस्तावना (Introduction)

शैक्षिक प्रक्रिया में मूल्यांकन बहुत महत्वपूर्ण है। मूल्यांकन के द्वारा शैक्षिक प्रगति की जानकारी होती है। इस इकाई के अर्न्तगत मूल्यांकन के अर्थ तथा प्रकृति की विस्तार से चर्चा की गई है। इस इकाई में मूल्यांकन की प्रमुख विशेषताओं से भी छात्रों को परिचित करवाया गया है। मूल्यांकन के विभिन्न प्रयोजन को भी बतलाया गया है। मूल्यांकन, मूल्य निर्धारण तथा मापन के बीच के संबंधों को भी इस इकाई में दर्शाया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत इकाई में मूल्यांकन की विस्तृत एवं सामग्री व्याख्या की गई है।

2. मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation)

मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ होता है मूल्य का अंकन अर्थात मूल्यांकन मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया है जिसके द्वारा उद्देश्यो की प्राप्ति की दिशा में प्रयत्नों की सार्थकता तथा सीमा की प्रभाव की व्याख्या करती है। इस प्रकार मूल्यांकन से शक्ति, लगन तथा उद्देश्य प्राप्ति हेतु किए गये प्रयत्न इत्यादि सभी का मूल्य आंकने का मौका मिलता है। इसी तरह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया हेतु किए जाने वाले प्रयत्नो पर भी लागू होती है। शिक्षण कक्ष तथा विद्यालय के वातावरण द्वारा जो कुछ भी गतिविधियाँ अपनायी जाती है वह किस सीमा तक निर्धारित उददेश्यों की प्राप्ति में सहायक है, इस बात का पता लगाना हीं मूल्यांकन कहलाता है। मूल्यांकन के द्वारा निश्चित शिक्षण अधिगम उददेश्यों के विषय में यह जानने का मौका मिलता है कि शिक्षण अधि गम प्रक्रिया, पाठ्यक्रम शिक्षण विधि तथा शिक्षण अधिगम अनुभव कितना प्रभावी है। अत: मूल्यांकन एक अत्यन्त व्यापक तथा बहुआयामी प्रक्रिया है जिसका संबंध सिर्फ छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से न होकर उसके संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास से होता है। मूल्यांकन के कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ भिन्न हैं :–

''मूल्यांकन में व्यक्ति या समाज अथवा दोनो की दृष्टि से क्या अच्छा है अथवा क्या जरूरत है का विचार या लक्ष्य निहित रहता है''

– एच0 एच क्रैमर्स तथा एन0 एन गैप

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT) ने मूल्यांकन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि यह एक ऐसी सतत् व व्यवस्थित प्रक्रिया है जिससे पता चलता है कि विशिष्ट शैक्षिक उददेश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है तथा कक्षा के अन्तर्गत दिए गये अधिगम अनुभव कितना प्रभावशाली सिद्द हुआ है एवं यह शिक्षा के उद्देश्यों को कितना हासिल कर पाएगा।

डेप्सी की एक पत्रिका के अनुसार– ''मूल्यांकन एक ऐसा पद है जो केवल मापन की व्याख्या नहीं करता बल्कि उसके विस्तृत अर्थ को बतलाता है। मापन केवल निर्देश के परिणामों की संख्यात्मक जाँच के लिए प्रयोग

में लाया जाता है जबकि मूल्यांकन छात्रों की प्रगति की जाँच के लिए व्यापक, विस्तृत तथा निरन्तर प्रक्रिया है।

मूल्यांकन = मापन + मूल्य निर्धारण

(Evaluation) (Measurement) (Value Judgment)

↓ ↓

(Quantitative) (Qualitative)

अत: मूल्यांकन का अभिप्राय मापन तथा मूल्य निर्धारण से भी है। मूल्यांकन का एक व्यापक परिभाषा बेबे के द्वारा दि गई थी। इसके अनुसार ''मूल्यांकन उस साक्ष्य का क्रमबद्ध संग्रह और उनका परिणाम निकालना है जो कि मूल्यों की जाँच की प्रक्रिया द्वारा कुछ करने के लिए प्रेरित करता है। इस परिभाषा की जब परीक्षण करते हैं तो पता चलता है कि इनमें चार तत्व शामिल है :–

(a) साक्ष्यों या अनुभवों को क्रमबद्ध रूप में इकट्ठा करना (अर्थात सूचना एकय करना)

(b) उनके अर्थो एवं व्यख्या यानि (मूल्यांकन प्रक्रिया का विश्लेषण)

(c) मूल्यों संबंधी निर्णय यानि मूल्यांकन प्रक्रिया की दशा एवं दिशा)

(d) क्रियान्वयन की दृष्टि से अर्थात (कार्य के परिणाम उन्मुखी तथा निर्णय उन्मुखी आपामों को ध्यान रखना)

परिणाम उन्मूखी तथा निर्णय उन्मूखी आयामों का ध्यान रखना।

अत: शैक्षिक मूल्यांकन का उद्देश्य शिक्षा में प्रभावी तथा उपयोगी नीतियों तथा कार्यो को शामिल करना है।

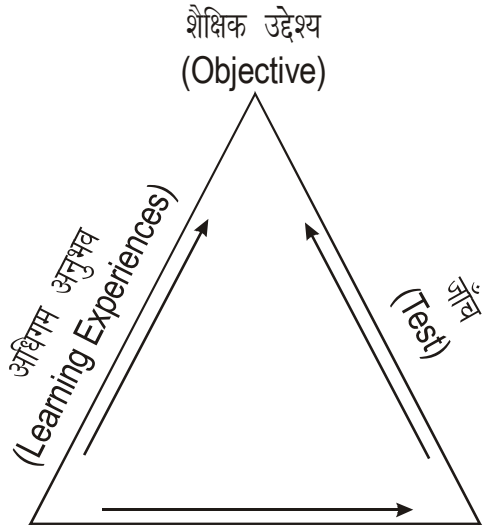

चित्र : मूल्यांकन की अवधारणा

(Concept of Evaluate)

अत: उपर्युक्त तथ्यों से यह पता चलता है कि मूल्यांकन सिर्फ परीक्षा नहीं है। व्यवहार में मूल्यांकन का इस्तेमाल छात्रों के उपलब्धि की जाँच के लिए की जाती है परन्तु इसका उपयोग शिक्षण अधिगम में सुधार के लिए भी किया जा सकता है। मूल्यांकन छात्रों के शिक्षण अधिगम का केवल मापन नहीं है। उसका इस्तेमाल छात्रों में उपलब्धि को बढ़ाने के लिए भी किया जाना चाहिए। मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग मानते हुए, मूल्यांकन के आँकड़े को निदानात्मक साधन के रूप में उपयोग किया जाए ताकि छात्रों के शिक्षण अधिगम

को सुधारने के लिए समुचित उपचारात्मक प्रक्रिया अपनायी जा सके।

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखने से निम्न बातों का पता चलता है :–

1. मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है।
2. मूल्यांकन एक व्यापक पद है जिसमे मापन तथा जाँच (Apprisal) दोनो निहित है।
3. मूल्यांकन क्षेत्र व्यापक है इसमें छात्रों के सभी पक्ष जैसे शारीरिक, मानसिक, नैतिक इत्यादि की जाँच की जाती है।
4. मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बालकों के व्यावहारिक परिवर्त्तनों की जाँच की जाती है।
5. मूल्यांकन का उददेश्य सिर्फ अध्ययन निस्पत्ति को मापना ही नहीं बल्कि उसको सुधारना भी है।
6. मूल्यांकन की प्रक्रिया द्वारा किसी तथ्य, विचार अथवा घटनाओं के विषय में यह निर्णय लिया जाता है कि वह वांछनीय या उपयोगी है अथवा नहीं।
7. मूल्यांकन के द्वारा गुणात्मक (Qualitative) या मात्रात्मक (Quantitative) दोनों प्रकार का विवरण प्राप्त होता है।
8. मूल्यांकन की विधियाँ कुछ परीक्षणों या परम्परागत परीक्षाओं तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि बहु–आयामी साधनों तथा तकनीको के प्रयोग हेतु लचीलापन तथा व्यापकता भी प्रदान करती है।
9. मूल्यांकन के द्वारा प्रक्रियाओं में संशोधन (Revision) किये जाते है। अतः नवीन संदर्भ में मूल्यांकन की प्रक्रिया को दोहाना आवश्यक है।
10. मूल्यांकन का उददेश्य की प्रप्ति के संदर्भ में शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षण विधियों तथा शैक्षिक व्यवस्था की गुणवत्ता की व्यापक जाँच और मापन किया जाता है।
11. मूल्यांकन, शिक्षण प्रणाली के सुधार में सहायक होता है। शैक्षिक व्यवस्था के सभी अदा (Input), प्रक्रिया (Process) के सभी पक्षो तथा प्रदा (Output) के संदर्भ में मूल्यांकन कर समस्त शिक्षा प्रणाली के सुधार एवं प्रगति में सहायता प्रदान करती है।

3. मूल्यांकन की आवश्यकताएँ (Need of Evaluation)

मूल्यांकन, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इन प्रक्रियाओं को प्रभावशाली तथा उपयोगी बनाने के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है। मूल्यांकन शिक्षकों को सही दिशा निर्देशय में सहायक होता है। मूल्यांकन के कुछ महत्वपूर्ण प्रयोजन निम्नवत हैं :–

1. कक्षा तथा शिक्षा के उददेश्यों को पूरा करना।
2. विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाईयाँ पता करना।
3. विद्यार्थियों को विशिष्ट कार्य के आधार पर अलग–अलग वर्ग बनाना जैसे–संगीत, वाद–विवाद, वैज्ञानिक रूचि, तथा हस्तकला इत्यादि संबंधी वर्ग–बनाना।
4. नये अधिगम अनुभवों की तैयारी।
5. समायोजन में छात्रों की सहायता करना।
6. प्रत्येक छात्र के सबल और निर्बल पक्ष की जानकारी के लिए।
7. किस उददेश्य की पूर्ति नहीं हुई है उसकी जानकारी के लिए।
8. नये कार्यक्रम की प्रमाणीकरण तथा सुविधाओं के अधिकतय उपयोग के लिए।
9. छात्रों की प्रगति की रिपोर्ट तैयार करना।
10. छात्रों की अभिप्रेरणा के लिए।

11. शिक्षण अधिगम उददेश्यों के निर्माण तथा जाँच के लिए।

12. शिक्षण प्रभाविता की जाँच।

4. मूल्यांकन की विशेषताएँ (Characteristics of Evaluation)

मूल्यांकन से संबंधित तथ्यों से पता चलता है कि एक अच्छे मूल्यांकन की क्या-क्या विशेषताएँ होनी चाहिए। क्योंकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रभाविकता के लिए मूल्यांकन अति आवश्यक है। शिक्षा अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न चरणो कें बार-बार छात्रों की योग्यताओं तथा उपलब्धियों का मापन एवं मूल्यांकन करना पड़ता है जिसके लिए एक अच्छे मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। एक अच्छे मूल्यांकन की विशेषताएँ निलंबत है :-

1. **वैधता (Validity) :** मूल्यांकन वैध वही होता है जो उददेश्य के अनुसार हो। उदाहरण स्वरूप अगर छात्रों की मनोवृति की जाँच करना है परन्तु प्रश्न तर्कशक्ति या स्मरण शक्ति जाँचने के लिए बना देय तो ऐसे मूल्यांकन वैध नहीं होते है। अर्थात वैधता मूल्यांकन की यह विशेषता बतलाती है कि कोई दिया गया परीक्षण मूल्यांकन के उद्देश्य को किस सीमा तक पूरा करता है। यदि कोई मूल्यांकन अपने उद्देश्य को पुरा करता है तो उस मूल्यांकन को वैध तथा इस विशेषता को वैधता कहा जाता है।

2. **विश्वसनीयता (Reliability):** मूल्यांकन की यह विशेषता परीक्षण से प्राप्त अंको की विश्वसनीयता को बताती है। यदि परीक्षण में किसी व्यक्ति को बार-बार लगभग एक समान अंक प्राप्त हो जो परीक्षण को विश्वसनीय माना जाएगा। इसके विपरित यदि एक ही उत्तर पर एक परीक्षक 40 अंक तथा दूसरा 20 अंक देता है तो यह मूल्यांकन विश्वसनीय नहीं माना जाएगा। वैधता और विश्वसनीयता में घनिष्ट संबंध है। वैधता में विश्वसनीयता भी समाहित है। परन्तु विश्वसनीयता में वैधता नहीं है।

3. **वस्तुनिष्ठता (Objectivity) :** जो भी मूल्यांकन का परिणाम का आकलन प्रत्येक जाँचकर्त्ता द्वारा जब एक समान हो तो इस गुण को वस्तुनिष्ठता कहा जाता है। यानि कोई भी व्यक्ति यदि किसी मूल्यांकन में समान अंक प्राप्त करता है चाहे उसका जाँचकर्त्ता कोई भी हो तो मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ हैं।

4. **प्रमाणीकरण (Standardisation) :** ऐसा मूल्यांकन जिसमे विधियों, यंत्र (tool) तथा फलांकन विधि निश्चित होते हैं। तो ऐसे मूल्यांकन को प्रभावीकृत मूल्यांकन होता है। यदि विभिन्न व्यक्ति द्वारा दिये गये अंको की तुलना करनी है तो यह जरूरी है कि मूल्यांकन के प्रशासन (Administer) की विधियाँ समान हो।

5. **मानक (Norms) :** प्रभावीकृत मूल्यांकन के मानक उपलब्ध होते है। अत: मानको का निर्धारण करना आवश्यक है। मानक एक संदर्भ बिन्दु हैं जिनके आधार पर परीक्षण से प्राप्त अंको की व्याख्या की जाती है। अगर मानक उपलब्ध होते हैं तो प्राप्तांको की व्याख्या करना सरल होता है।

6. **विभेदीकरण (Discrimination) :** एक मूल्यांकन विभेदकारी तभी होता है, जब वह अधिगम परिणाम के अन्तर को पता कर सके एवं योग्य तथा अयोग्य छात्रों में भेद कर सके। अत: यह भी एक अच्छे मूल्यांकन की विशेषता है।

7. **व्यापकता (Comprehensiveness) :** इसका अर्थ होता है कि मूल्यांकन में अधिक से अधिक पाठ्यक्रम के तथ्यों को शामिल करना मूल्यांकन में केवल आंशिक न्यायदर्श न हो। जितने अधिक पाठ्यक्रम के अंशों को शामिल किया जाएगा, वह मूल्यांकन उतना ही व्यापक होगा। मूल्यांकन इतना अवश्य व्यापक हो कि वह वेध हो सके। अत: मूल्यांकन को व्यापक बनाने के लिए इसके सभी उददेश्यों तथा परिणामों को ध्यान में रखना आवश्यक है।

8. **व्यवहारिकता (Practicability) :** मूल्यांकन की प्रक्रिया सरल, समय, कीमत, उददेश्य तथा प्रयोग सरलता की दृष्टि से वास्तविक, व्यावहारिक और कुशल होनी चाहिए। कोई मूल्यांकन बहुत आदर्श हो परन्तु उसे व्यवहार में लागु करना संभव नहीं हो तो ऐसे मूल्यांकन को अच्छा नहीं माना जाता है।

9. **न्याय संगतता (Equity) :** मूल्यांकन हमेशा सभी छात्रों के लिए न्यायसंगत होनी चाहिए। यह तभी संभव है जब मूल्यांकन पाठ के उददेश्यों के अनुरूप हो तथा मूल्यांकन की प्रकृति, परीक्षा की संरचना, विस्तार, परीक्षा

परिणाम एवं अंको का विषय के अनुसार बँटवारा तथा उनका महत्व इत्यादि की सूचना छायो को ससमय मिलनी चाहिए।

10. **उपयोगिता (Usability) :** मूल्यांकन छात्रों के लिए उपयोगी होना चाहिए। परीक्षा को परिणामों से छात्रों को अवगत होना चाहिए। मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को अपनी कमजोरियों तथा मजबुतियो को जानने का मौका मिले। अत: एक अच्छे मूल्यांकन से छात्र अपनी कमजोरियो को जानने तथा उन्हे दूर करने में बहुत प्रभावी होता है।

11. **ग्राह्यता (Acceptability) :** एक अच्छे मूल्यांकन प्रत्येक छात्रों को हर अवस्था क्या परिस्थिति में ग्राहण होना चाहिए। जैसे बिनेस्सपूम का बुद्दि परीक्षण हर परिस्थिति में किसी भी व्यक्ति के लिए ग्राह्य है।

12. **उद्देश्यपूर्ण (Purpose full) :** मूल्यांकन का प्रयोजन पूर्ण निर्धारित होना चाहिए। ऐसा न हो कि मूल्यांकन के बाद परिणाम का कोई औचित्य न हो। अत: एक अच्छे मूल्यांकन का प्रयोजन पूर्वनिर्धारित होता है।

13. **प्रशासन में समता (Ease of Administration) :** एक अच्छा मूल्यांकन हमेशा ही साथ होता है जिसका निर्देश सरलता और स्पष्ट होता है। मूल्यांकन की प्रकृति जटिल नहीं होनी चाहिए।

14. **व्याख्या की सरलता (Ease of Interpretation) :** मूल्यांकन की परिणाम की व्याख्या सरल होनी चाहिए ताकि शिक्षक आसानी से उसके परिणाम को जान सके। शिक्षक को परिणाम की व्याख्या के लिए उच्च सांख्यिकी विधि सूत्र का प्रयोग न करना पड़े।

5. मूल्यांकन तथा मापन में संबंध (Relation Between Evaluation and Measurement)

मूल्यांकन मापन की तुलना में एक विस्तृत अवधारणा है जो किसी भी समामाजिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक संदर्भ में एक गुणात्मक तथा निर्णयात्मक विश्लेषण है। अर्थात शैक्षिक मूल्यांकन अर्थ उन सभी प्रक्रियाओं से है जो बताती है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया कितना प्रभावी रही। मूल्यांकन किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया के विषय में आँकड़ा एकत्रित करना, उसका विश्लेषण तथा व्याख्या का प्रक्रिया को परखने का एक माध्यम है। यह प्रक्रिया का गुणात्मक तथा निर्णयात्मक विश्लेषण है। जबकि मापन मूल्यांकन का वह भाग है जो मात्रा, अंको, माध्यमान, प्रतिशत तथा औसत में व्यक्त किया जाता है। अत: स्पष्ट है कि मापन छात्रों की प्रगति को आँकड़ों मे व्यक्त करता है जबकि मूल्यांकन व्यापक उददेश्यों की जाँच करता है।